سچی نماز

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ

सच्ची नमाज़

साथ

नीयत नामा

MUSHAHID
BOOK DEPOT
مشاہد بکڈپو
29A, Zakaria Street,(1st Floor) kolkata-73

★★★ बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम ★★★

बेशक नमाज़ बे हयायी और बुरे कामों से रोकती है (क़ुरआन)

सच्ची नमाज़

साथ

१६ सूरह नीयतनामा

दुआ-ए-गन्जुल अर्श

Published by

MUSHAHID BOOK DEPOT

29A, ZAKARIA STREET, IST FLOOR, KOLKATA-73 PH: 033 2234 3406

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लामी कलिमे

(१) कलिमए तय्यिब-

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(२) कलिमए शहादत-

अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरी क लहु व अशहदु अन् न मुहम्मदन् अब्दु हू व रसूलु हू

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

(३) कलिमए तम्जीद-

सुब्हा नल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व ला हौ ल व ला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अलीईल अ़ज़ीम

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

(४) कलिमए तौहीद-

ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहु लहुल मुल्कु व लहु ल्हम्दु युह्यी व युमीतु व हु व हय्युल् ला यमूतु अब दन अबदा ज़ुल्जलालि वल्इक्रामि बि यदि हिल्खैरु व हु व अला कुल्ले शैईन् क़दीर

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِیْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

(५) कलिमए इस्तग़फ़ार—

अस्तग़् फ़िरूल्ला ह रब्बी मिन् कुल्लि जम्बिन् अज़् नब्तुहु अमदन् औ खता अन् सिर्रन् औ अलानि य तँव व अतूबु इलैहि मिनज्ज़म्बिल् लज़ी ला आ लमु इन्न क अन् त अल्लामुल ग़ोयूबि व सत्तारूल् ओयूबि व ग़फ्फ़ारू ज़् जुनूबि व ला हौ ल व ला कूव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिई ल अज़ीम।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْخَطَاً سِرًّا اَوْعَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْٓ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ

(६) कलिमए रद्दे कुफ़्र-

अल्ला हुम् म इन्नी अऊज़ु बि क मिन अन् उश रि क बि क शैअवँ व अना आअलमु बिही व अस्तग़् फिरू क लिमा ला अअलमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्राअतु मिनल् कुफ़रि वशिशर्कि वल् किज्बि वल् ग़ीबति वल् बिदअति वन्नमीमति वल्फवाहिशि वल्बुहतानि वल् मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व अकूलु ला इला ह इल्लाल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ईमाने मुजमल-

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु व बि असमाएही व सिफ़ातिही व क़बिल्तु जमी अ़ अहकामिही

آمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ

ईमाने मुफस्सल-

आमन्तु बिल्लाहि व मला इ क तिही व कु तु बिही व रुसुलेही वल यौमिल आखिरे वल क़दरि ख़ैरेही व शर्रेहि मिनल्लाहि तआ़ला वल बाअसि बाअद़ल मौति

آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ؕ

नमाज़ों की नीयत

(अ़र्बी और हिन्दी में)

नमाज़े फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

फ़ज्र की दो रकअ़त फर्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْفَجْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ फ़ज्र की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की चार रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ سُنَّتَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की चार रकअत फ़र्ज-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ فَرْضَ
اللّٰهِ تَعَالٰى مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने नमाज़ जुहर की चार रकअत् फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद जुहर दो रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الظُّهْرِ سُنَّةَ رَسُوْلِ
اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की फ़र्ज के बाद वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुहर की दो रकअत नफ्ल-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ النَّفْلِ مُتَوَجِّهًا
اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुहर की नफ्ल वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

अस्त्र की चार रकअत सुन्नत-

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़े अस्त्र की सुन्नत रसूले पाक की

वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अस्त्र की चार रकअत फर्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ فَرْضَ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ अस्त्र की फ़र्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकवर

मग़रिब की तीन रकअत फर्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ فَرْضَ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज़ मग़रिब की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकवर

मग़रिब की दो रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ मग़रिब की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

इशा की चार रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ इशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

नमाज़े इशा की चार रकअ़त फ़र्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی اَرْبَعَ رَكَعَاتِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ
فَرْضَ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ इशा की फ़र्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद इशा दो रकअ़त सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ ईशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

वित्र की तीन रकअ़त वाजिब-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی ثَلٰثَ رَكَعَاتِ صَلٰوةِ الْوِتْرِ وَاجِبًا
لِلّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने तीन रकअ़त नमाज़ वित्र की वाजिब वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

मस्जिद में दाखिल होने की दो रकअ़त सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ دُخُوْلِ الْمَسْجِدِ
سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ मस्जिद में दाखिल होने की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा

शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ से पहले की चार रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ قَبْلَ الْجُمُعَةِ

سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअ़त नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ की दो रकअत फर्ज़-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ الْجُمُعَةِ فَرْضَ اللّٰهِ

مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ जुम्आ की फर्ज़ वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

बाद जुम्आ चार रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ

سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने बाद जुम्आ चार रकअ़त सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

जुम्आ की दो रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی رَكْعَتَیْ صَلٰوةِ بَعْدَ ا لْجُمُعَةِ

سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰی جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआ़ला के रूख मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ عِيْدِ الْفِطْرِ
مَعَ سِتَّةِ تَكْبِيْرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰى
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र की वाज़िब जाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़ ईदुल अज़हा-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ عِيْدِ الْاَضْحٰى
مَعَ سِتَّةِ تَكْبِيْرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلّٰهِ تَعَالٰى
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल अजहा की वाजिब ज़ाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

दो रकअत नमाज़े तरावीह-

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْ صَلٰوةِ التَّرَاوِيْحِ سُنَّةَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ तरावीह की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख़ मेरा काअ़बा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर

नोट-

(१) नमाज़े नफ्ल की नीयत ख्वाह जुहर की हो या मगरिब या इशा की सबकी नीयत एक ही जैसी है।

(२) फर्ज़ों की नीयत में اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا الْاِمَامِ *इकतदयतु बिहाज़ल इमाम* (पीछे इस इमाम के) भी कहे जबकि जमाअ़त से पढ़ता हो।

फ़ज़ाइले नमाज़

ईमान व अक़ीदा सही कर लेने के बाद मुसलमानों पर सब फ़र्ज़ों से अहम फ़र्ज़ और तमाम इबादतों में बड़ी इबादत नमाज़ है कुरआने पाक और अहादीसे तय्यिबा में सब से ज्यादा इसी की ताकीद आयी है और इसके छोड़ने पर सख्त अज़ाब और शदीद वईदें वारिद हुयी हैं। ज़ैल में इस सिलसिले की चन्द हदीसें ज़िक्र की जाती हैं कि मुसलमान अपने आक़ा प्यारे मुस्तफा रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इर्शादात सुनें, अमल करें और दुसरों को अमल की तरगीब दें अल्लाह तआला अमल की तौफीक़े रफीक़ अता फरमाए। आमीन।

(१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम् इर्शाद फरमाते हैं कि ***इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर है। १. इस अम्र की शहादत देना कि अल्लाह के सिवा कोयी सच्चा माअबूद नहीं और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं। २. नमाज़ काएम रखना। ३. जकात देना। ४. हज करना। ५. और माहे रमज़ान के रोज़े रखना।*** (बुखारी शरीफ)

(२) हज़रते अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्ह कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे आअला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पूछा कि ***आमाल में अल्लाह तआला के नज़्दीक सब से ज़्यादा महबूब क्या है?*** फरमाया! ***नमाज़ वक्त के अन्दर***, मैंने अर्ज़ किया फिर क्या? फरमाया ***वाल्दैन के साथ नेक सुलूक-*** अर्ज़ किया! फिर क्या? फरमाया! ***राहे खुदा में जिहाद***।(बुखारी शरीफ)

(३) रहमतल्लिल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम् ने इर्शाद फरमाया! ***बताओ तो किसी दरवाज़े पर नहर हो और वह उसमें हर रोज़ पाँच बार गुस्ल करे- क्या उसके बदन पर मैल रह जायेगा!*** सहाबा ने अर्ज़ किया! उसके बदन पर कुछ बाकी न रहेगा, फरमाया! ***यही मिसाल पाँचों नमाज़ों की है कि अल्लाह तआला उन की सब ख़ताओ को मिटा देता है।*** (बुखारी शरीफ)

(४)नबीए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जाड़े में बाहर तशरीफ ले गये पतझड़ का ज़माना था दो टहनियाँ पकड़ लीं पत्ते गिरने लगे फरमाया! *ऐ अबूज़र?* अर्ज किया *लब्बैक या रसूल्लाह*! फरमाया *मुसलमान बन्दा अल्लाह तआला के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह ऐसे ही गिरते है जैसे इस दरख्त से पत्ते*। (अबू दाऊद बहवाला मिश्कात सफ्हा ५८)

वुज़ू करने का सही तरीका

नीयत करने और बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ने के बाद मिस्वाक इस्तेमाल की जाए। फिर गट्टों तक हाथों को पानी से मले और उगिलयों का खिलाल करे फिर बाएँ हाथ में लोटा वगैरह लेकर दाहिने हाथ पर उंगलियों की तरफ से शुरू करके गट्टे तक तीन बार पानी बहाया जाए फिर बाएँ हाथ पर उगलियों की तरफ़ से शुरू करके गट्टे तक तीन बार पानी बहाए फिर तीन बार कुल्ली करे इस तरह कि मुँह की तमाम जड़ों और दांतों की सब खिड़कियों में पानी पहुँच जाए कि वुज़ू में इस तरह कुल्ली करना सुन्नते मुअक्किदह है और गुस्ल में फ़र्ज है। अगर रोज़हदार न हो तो हर कुल्ली गरगरह के साथ करे फिर नाक में अगर रींठ लगी हो तो बाँए हाथ से साफ करके सांस की मदद से तीन बार नर्म बाँसो तक पानी चढ़ाए ताकि कोयी बाल धुलने से बाक़ी न रहे फिर चेहरा पर अच्छी तरह पानी मल कर इसको तीन बार इस तरह धोए कि एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पेशानी के ऊपर कुछ सर के हिस्से से ठोड़ी के नीचे तक हर हिस्सा पर पानी बह जाए अगर दाढ़ी हो तो इस तरह खिलाल करे कि उँगलियों को गरदन की तरफ से दाखिल करे और सामने निकाले और उसके बाल और खाल पर भी पानी बहाए फिर दोनों हाथों पर पानी मल कर पहले दाहिने हाथ पर फिर बायें हाथ पर सरे नाखुन से शुरू करके निस्फ बाज़ू तक तीन मरतबा पानी बहाए फिर सिर का मसह इस तरह करे कि दोनों हाथों के अँगूठे और कलिमें की उँगलिया छोड़ कर बाक़ी तीन तीन उँगलियों के सरे मिलाकर

पेशानी के बाल उगने की जगह पर अगर बाल हों वरना इसकी खाल पर रक्खे और सिर के उपरी हिस्से पर गद्दी तक इस तरह ले जाए कि हथेलियाँ सर से जुदा रहें फिर वहां से हथेलियों से सिर के दोनों करवटों का मसह करते हुये पेशानी तक वापस लाए उसके बाद कलिमे की उगलियोँ के पेट से कान के अन्दरुनी हिस्सा का मसह करे और अंगूठे के पेटसे कान के बाहरी सतह का मसह करे और उन्ही उगलियों की पुश्त से सिर्फ गरदन का मसह करे फिर पानी से दोनों पांव मले और बाँए हाथ की छंगुलिया से इस तरह खिलाल करे कि दाहिने पाँव की छंगुलिया से शुरू करके अंगूठे पर खतम करे और बाँए पांव में अंगूठे से शुरु करके छंगुलिया पर खतम करे और दोनों पांव पर उंगलियों की तरफ से निस्फ पिण्डली तक हर बाल और हर हिस्सए खाल पर तीन तीन बार पानी बहाए। (मुकम्मल निज़ामे शरीअ़त)

वुज़ू के फ़राइज़

वुजू में ४ फर्ज़ हैं :-(१) मुँह धोना पेशानी के बालों से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान की लौ से दुसरे कान की लौ तक; (२) दोनों हाथों को कुहनियों समेत धोना; (३) चौथाई सर का मसह करना; (४) दोनों पांव टख्नों समेत धोना। (रद्दुल मुहतार १ सफ्हा ९७)

वुज़ू की सुन्नतें

(१) नीयत करना; (२) बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ना; (३) पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोना; (४) मिस्वाक करना; (५) तीन बार कुल्ली करना इस तरह कि पानी तमाम मुँह के अन्दर हलक़ की जड़ तक पहुँच जाए; (६) तीन मरतबा नाक की तमाम नर्म जगहों में पानी पहुंचाना; (७) मुँह धोते वक्त दाढ़ी का खिलाल करना; (८) हाथ पाँव की उगलियों का खिलाल करना; (९) हर अ़ज्व को तीन तीन बार धोना; (१०) एक बार पूरे सर का मसह करना; (११) दोनों कानों का मसह करना; (१२) तरतीब से वज़ू करना; (१३) अज़ा को पय दर पय (लगातार) धोना; (१४) दाढ़ी के जो बाल मुँह के दायरे से नीचे हैं उनका मसह करना; (आलमगीरी व बहारे शरीअ़त)

वुज़ू के मुस्तहब्बात

(१) जो आअज़ा चौड़े हैं मसलन दोनों हाथ दोनों पांव तो इन में दाहिने से धोने की इब्तदा (पहल) करें मगर दोनों रुख्सार कि इन दोनों को एक ही साथ धोना चाहिये यूँही दोनों कानों का मसह एक साथ होना चाहिये; (२) उँगलियों की पीठ से गरदन का मसह करना; (३) ऊँची जगह बैठकर वुज़ू करना; (४) वुज़ू का पानी पाक जगह गिराना; (५) अपने हाथ से वुज़ू का पानी भरना; (६) दूसरे वक्त के लिये पानी भर कर रख देना; (७) ढीली अंगूठी को भी फिरा लेना; (८) साहिबे उज़्र न हो तो वक्त से पहले वुज़ू कर लेना; (९) इतमिनान से वुज़ू करना; (१०) कानों के मसह के वक्त उँगलियां कानों के सुराखों में दाखिल करना; (११) कपड़ों को टपकते हुये क़तरात से बचाना; (१२) वुज़ू का बरतन मिट्टी का होना; (१३) अगर तांबे वगैरह का हो तो क़लयी किया हुआ हो; (१४) अगर वुज़ू का बरतन लोटा हो तो बाँए तरफ रखना; (१५) हर अज़्व को धोकर उसपर हाथ फेरना ताकि क़तरे बदन पर या कपड़े पर न टपकें; (१६) हर अज़्व को धोते वक्त दिल में वुज़ू की नीयत का हाजिर रहना; (१७) हर अज़्व को धोते वक्त अलग अलग अज़्व के धोने की दुआओं को पढ़ते रहना; (१८) आज़ाए वुज़ू को बिला ज़ुरुरत पोंछ कर खुश्क न करे और अगर पोछे तो कुछ नमी बाकी रहने दे; (१९) वुज़ू करके हाथ न झटके कि यह शैतान का पंखा है; (२०) वुज़ू के बाद अगर मकरूह वक्त न हो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ ले इसको *तहियतुल्वुज़ू वुज़ू* कहते हैं।

वुज़ू के मकरुहात

(१) वुजू के लिए नापाक जगह बैठना या नापाक जगह वुजू का पानी गिराना; (२) आज़ाए वुज़ू से लोटे वगैरह में पानी टपकाना; (३) मस्जिद के अन्दर वुज़ू करना; (४) पानी में थूकना, नाक सिनिक्ना अगर चि दरिया या हौज़ हो; (५) किब्ला की तरफ थूकना या कुल्ली करना; (६) बे ज़ुरुरत दुनिया की बातें करना; (७) ज़ुरुरत से ज़्यादा पानी ख़र्च करना; (८) इतना कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न हो; (९) चेहरा पर ज़ोर से पानी

मारना; (१०) एक हाथ से मुँह धोना कि यह हिन्दुओं (काफिरों) का तरीक़ा है; (११) गले का मसह करना। (१२) बांए हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना; (१३) दांए हाथ से नाक साफ करना; (१४) धूप के गर्म पानी से वुज़ू करना कि वह बर्स (सफेद दाग़) पैदा करता है; (१५) होंट या आँख ज़ोर से बन्द कर लेना; (१६) किसी सुन्नत को छोड़ देना। (बहारे शरीअत़)

वुज़ू को तोड़नेवाली चीजें

पाखाना, पेशाब, वदी, मज़ी, मनी, कीड़ा, पथरी, जो मर्द या औरत के आगे या पीछे के मक़ाम से निकलें। ★ मर्द या औरत के पीछे के मक़ाम से हवा का निकलना; ★ खून या पीप या पीले पानी का बदन के किसी भी हिस्सा से निकलना और बहना, खाने या पानी या सुफ़्रा की मुँह भर क़य आना; ★ इस तरह सो जाना कि दोनों सुरीन अपनी जगह अच्छी तरह न जमें हों; ★ चित या पट या करवट पर लेट कर सो जाना; ★ बेहोशी, जुनून, ग़शी और इतना नशा कि चलने में पाँव लड़खड़ाए इससे भी वुज़ू टूट जाता है; ★ बालिग़ शख्स का रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में इतनी आवाज से हँसना कि आसपास वाले सुन लें; ★ दाँतों से इस क़द्र खून निकलना कि इससे थूक का रंग सुर्ख (लाल) हो गया; ★ दुखती हुयी आँख से पानी बहना क्यूंकि वह पानी (आँसू) नापाक है, इस तरह कान, नाक, पिस्तान वग़ैरह में दाना या नासूर या कोयी मर्ज़ हो उनकी वजह से जो पानी बहे इससे भी वुज़ू जाता रहता है;

मसअलह :- औरत के आगे के मक़ाम से जो खालिस रतूबत बिगैर खून वाली निकलती है इससे वुज़ू नहीं टूटता अगर यह रतूबत कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है;

मसअलह : आँख में दाना था और वह फूट कर आँख के अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या कान के अन्दर दाना टूटा और उसका पानी सुराख से बाहर नहीं निकला तो इन सूरतों में वुज़ू बाकी है;

मसअलह : बलग़म की क़य से वुज़ू नहीं टूटता जितनी भी हो।

वुज़ू के बाद की दुआ

वुज़ू के दरमियान दुरुद शरीफ पढ़ना मुस्तहब है और वुज़ू करके यह दुआ पढ़े। اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ط

अल्लाहुम्मज्ज़अल्नी मिनत्तौवाबीन वज्ज़अल्नी मिनल मुततहहिरीन ☆ और कलिमए शहादत भी पढ़े।

गुस्ल का बयान

गुस्ल कहते है नहाने को मगर शरीअ़त में नहाने का एक खास तरीका है और वह इस तरह है कि पहले इस्तिन्जा करे फिर उसके बाद जो निजासत बदन पर लगी हो उसे धो डाले फिर वुज़ू करे इसके बाद सारे बदन पर तीन मरतबा पानी बहाए।

गुस्ल के फ़राइज़ तीन हैं

(१) कुल्ली करना; (२) नाक में पानी डालना; (३) सारे बदन पर पानी बहाना।

गुस्ल की सुन्नतें

(१)गुस्ल की नीयत करना; (२) दोनों हाथों को पहले गट्टों तक तीन बार धोना; (३) बिस्मिल्लाह पढ़ना; (४) शर्मगाह को गुस्ल से पहले धोना उस पर निजासत हो या न हो; (५) वुज़ू करना; (६) तीन मरतबा सर और तमाम बदन पर पानी बहाना; (७) किब्ला की तरफ मुँह न करना; (८) तमाम बदन पर पानी मल लेना ताकि हर जगह पानी अच्छी तरह पहुंच जाए; (९) ऐसी जगह नहाना जहां कोई न देखे; (१०) पानी में कमी या ज़्यादती न करना; (११) औ़रतों को बैठ कर नहाना; (११) नहाते वक्त कोई बात न करना; (१२) कोई दुआ न पढ़ना;

गुस्ल का तरीक़ा

पहले दोनों हाथ गट्टे तक धोए उसके बाद फि जहाँ निजासत लगी हो धोए फिर इस्तिन्जा की जगह धोए और *बिस्मिल्लाह* पढ़ कर वुज़ू करे, कुल्ली के साथ गरारह भी करे लेकिन अगर रोजे से हो तो गरारह न करे सिर्फ कुल्ली करे नाक में नरम बांसे तक पानी ले जाये, फिर वुज़ू के बाद तमाम बदन पर थोड़ा पानी

डाल कर तेल की तरह चुपड़ ले और पहले दाहिने मूढ़े पर फिर बाए मूढ़े पर तीन बार पानी बहाए इसके बाद तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए और बदन खूब मले ताकि कोयी जगह पानी पहुंचने से बाकी न रह जाए। खुली हुयी जगह पर नंगा न नहाए मर्द को नाफ से घुटने तक और औ़रत को गले से टखने तक छुपाना फ़र्ज है और गुस्लखाने वगैरह में हो और जरुरत हो तो न छुपाने में कोई हरज नहीं औ़रत के बाल अगर गुंधे हों लेकिन जड़ों तक पानी पहुंच सकता है तो खलोने की जरूरत नहीं वरना खोलना जुरूरी है अगर ज़ेवर वगैरह पहनी हो तो उसको फिरा कर सुराख में पानी को बहाए अगर मर्द के बाल औ़रत की तरह लम्बे हों और वह चोटी या जूड़ा बाँधें हो तो बालों को खोल कर जड़ों तक पानी पहुंचाना जरुरी है बगैर इसके गुस्ल सही नहीं होगा। (गुलज़ारे शरीअ़त)

तयम्मुम का बयान

वज़ू और गुस्ल के लिए जब पानी न मिल सके या पानी नुकसान करे तो पाक मिट्टी पर पंजों समीत हथेली मार कर चेहरा और तमाम हाथों पर फेर लेना ***तयम्मुम*** कहलाता है।

तयम्मुम का तरीका

तयम्मुम में नीयत फ़र्ज है यानी नीयत करे कि नापाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मुम करता हूं :- नीयत के बाद दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे फिर हाथ झाड़कर तमाम मुँह पर मले और जितना हिस्सा मुँह का वज़ू में धोया जाता है उतने हिस्सा पर हाथ पहुँचाए फिर दुबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथों को कुहनियों तक मले और उँगलियों का खिलाल भी करे वज़ू और गुस्ल के तयम्मुम में कोई फ़र्क नहीं है और जितनी पाकी वज़ू और गुस्ल से होती है उतनी है तयम्मुम से भी होती है।

अज़ान व अक़ामत

फ़र्ज नमाजों से पहले अज़ान देना सुन्नते मुअक्किदह है और शुआ़रे इस्लाम में दाखिल है जो शख्स अज़ान दे उसे चाहिए कि ऊँची जगह क़िब्ला की तरफ रूख करके खड़ा हो और कलिमा की

दोनों उँगलियों को कानों के दोनों सुराखों में डाल कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहे अज़ान के बाद जमाअ़त से पहले अक़ामत (तकबीर) कही जाती है अकामत बिलकुल अज़ान की तरह है सिर्फ़ चन्द बातों का फ़र्क़ है : (१) अक़ामत में *हय्य अलस्सलात* और *हय्य अलल फलाह* के बाद *क़द का म तिस्सलात* दो बार कहे (२) अक़ामत अज़ान के मुकाबिले में जरा पस्त आवाज़ से कहे (३) अक़ामत कहते वक्त कानों के सुराखों में उँगलियां डालने की जुरुरत नहीं (४) अक़ामत मस्जिद के अन्दर कहे :-

तम्बीह : (१) अक़ामत में *हय्य अलस्सलात* और *हय्य अलल फलाह* कहते वक्त दाहिने बाए मुँह न करे (२) इमाम और मुक्तदी *हय्य अलस्सलात* या *हय्य अलल् फ़लाह* के वक्त खड़े हों :-

अज़ान का तरीक़ा

मस्जिद के बाहरी हिस्से में किसी ऊँची जगह पर किब्ला की तरफ मुँह करके खड़ा हो और कानों के सुराखों में कलिमा की उंगलियाँ डाल कर बुलन्द आवाज़ से *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर जरा ठहर कर *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर जरा ठहर कर दो बार *अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह* اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे फिर जरा ठहर कर दो बार *अश्हदु अन्-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह* اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहे फिर दाहिनी तरफ मुँह फेर कर दो बार *हय्य अलस् सलात* حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ कहे फिर बाँयी तरफ मुँह करके दो बार *हय्य अलल् फलाह* حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहे फिर किब्ला की तरफ मुँह करे और एक बार *अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर* اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर एक बार *ला इला ह इल्लल्लाह* لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे।

फज्र की अज़ान में *हय्य अलल् फलाह* के बाद दो बार *अस्सलातु खैरुम् मिनन् नौम* भी कहे। अज़ान के बाद

दुरूद शरीफ पढ़े फिर अज़ान कहने वाला और अज़ान सुनने वाले सभी यह दुआ पढ़ें।

अज़ान के बाद की दुआ

अल्लाहुम्म सल्ले अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आलेही वसल्लिम। अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद दअवतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाए मति आति सय्यिदिना मुहम्मदनिल वसी ल त वल् फ़दील त वद् द र जतर्रफ़ी अ त वब अस्हु मक़ामम महमू दनिल् लज़ी व अत्तहू वरज़क़ना शफ़ा अ तहू यौमल क़िया मति इन्न क लॉ तुख्लिफुल मी आद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَسَلِّمْ اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ االْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

नमाज़ के फ़राइज़

नमाज़ में १२ फ़र्ज हैं जिनमें से चन्द ऐसे हैं जिन का नमाज़ से पहले होना ज़ुरुरी है और उनको नमाज़ के खार्ज़ी फराइज़ और शराइते नमाज़ भी कहा जाता है और चन्द फराइज़ वह हैं जो दाखिले नमाज़ हैं सबकी फिहरिस्त यह है :-

शराइते नमाज़

(१) तिहारत यानी बदन और कपड़ों का पाक होना (२) सतरे औरत यानी मर्दो को नाफ से घुटनों तक और औरतों को चहरे और हथेलियों और कदमों के अलावा तमाम बदन का ढाँकना फ़र्ज है (३) नमाज़ का वक्त होना (४) किब्ला की तरफ रुख होना (५) नमाज़ की नीयत करना :-

फराइज़े नमाज़

(१) तकबीरे तहरीमा (२) क़याम यानी खड़ा होना (३) किरअत

यानी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरत पढ़ना (४) रुकूअ करना (५) सिज्दा करना (६) काअ़दए अखिरह (७) अपने इरादे से नमाज़ खत्म करना :-

अगर इनमें से कोई चीज़ भी जानकर या भूल कर रह जाए तो सिज्दए सह्व करने से भी नमाज़ न होगी बल्कि दुबारा पढ़ना जुरुरी होगा :-

वाजिबाते नमाज़

जैल की चीज़े नमाज़ में वाजिब हैं :-

★ तहरीमा में लफ्ज़े अकबर कहना; ★ अलहम्द पढ़ना और इसके साथ कोई सूरत मिलाना; ★ फर्ज़ की पहली दो रकअतों में किरअत करना; ★ अलहम्दु को सूरत से पहले पढ़ना; ★ रुकूअ करके सीधा खड़ा होना; ★ दोनों सिज्दों के दरमियान बैठना; ★ पहला काअ़दह करना; ★ पहले काअ़दह में अत्तहियात के बाद कुछ न पढ़ना; ★ हर काअदह में अत्तहियात का पढ़ना; ★ लफ्ज़े अस्सलाम आख़िर में २ बार कहना ★ जुहर व अस्र में किरअत आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना;★ इमाम के लिये मग़रिब व इशा की पहली दो रक़अतों और फ़ज्र व जुम्आ व इदैन और तरावीह की सब रकअतों में बुलन्द आवाज़ से किरअत करना; ★ वित्र में दुआए कुनूत का पढ़ना; ★ इदैन में ६ तकबीरें ज़्यादा कहना;

वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूल कर छूट जाए तो सिज्दए सह्व से नमाज़ हो जायेगी अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दुबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है सिज्दए सहव से भी काम न चलेगा।

नमाज़ की सुन्नतें

* तकबीरे तहरीमा के लए हाथ उठाना; * हाथों की उँगलियाँ अपने हाल पर रखना; * तकबीर के बाद फौरन हाथ बाँध लेना; * पहले *सुब्हा न क* फिर *अऊ जु बिल्लाह* और *बिस्मिल्लाह* पढ़ना; * अलहम्द के खतम पर *आमीन* आहिस्ता से कहना; * रुकूअ में घुटनों पर हाथ रखना और

उँगलियां न फैलाना; ❋ रुकूअ में कम से कम तीन बार *सुब्हा न रब्बियल अज़ीम* कहना; ❋ रुकूअ़ में जाने के लिए *अल्लाहु अकबर* कहना; ❋ रुकूअ़ में सिर्फ इस कदर झुकना कि हाथ घुटनों तक पहुँच जाए; ❋ रुकूअ़ से उठते वक्त *समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह* कहना ❋ सज्दे के लिए और सज्दे से उठने के लिए *अल्लाहु अकबर* कहना; ❋ सज्दे में हाथ ज़मीन पर रखना; ❋ कम से कम तीन बार *सुब्हा न रब्बियल आला* कहना; ❋ सज्दे में जाने के लिए ज़मीन पर पहले दोनों घुटने एक साथ रखना फिर हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी और सज्दे से उठते वक्त इसके उल्टा करे यानी पहले पेशानी उठाए फिर नाक फिर हाथ फिर घुटने; ❋ दोनों सज्दों के दरमियान मिस्ले तशहहुद के बैठना; ❋ दुसरी रकअत के लिए पंजो के बल घुटनो पर हाथ रख कर उठना; दुसरी रकअ़त के सज्दों से फ़ारिग होकर बायाँ पाँव बिछा कर दाहिना खड़ा करके बैठना और औरत के लिए दोनों पाँव दाहिनी जानिब निकाल कर बाँए सुरीन पर बैठना; ❋ दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखना और बायाँ बायीं पर; ❋ उँगलियों को अपने हाल पर छोड़ना और उनके किनारे घुटनों के पास होना; ❋ शहादत पर इशारा करना; ❋ तशहहुद् के बाद काअ़दए अखीरह में दुरूद शरीफ पढ़ना; ❋ दुरूद शरीफ के बाद अ़र्बी में दआ़ करना और बेहतर वह दआएँ हैं जो हदीसों से मंकूल हैं; ❋ *अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह* दो बार कहना पहले दाहिनी तरफ फिर बायीं तरफ; ❋ जुहर, मग़रिब और इशा के बाद मुख्तसर दुआ करके सुन्नतों के लिये खड़ा हो जाना वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा; (दुर्रे मुख्तार, आलमगीरी वगैरह)

नमाज़ के मुस्तहब्बात

❋ क़याम की हालत में सज्दा की जगह नज़र रखना; ❋ रुकूअ़ में पाँव की पीठ की तरफ, सज्दह में नाक की तरफ और काअ़दह में गोद की तरफ नज़र रखना- ❋ पहले सलाम में दाहने शाने की तरफ दुसरे में बाँए तरफ नज़र रखना; ❋ जमायी आए तो मुँह बन्द किये रहना अगर न रुके तो होंट दाँत के नीचे दबाए

और इससे भी न रुके तो क़याम में दाहिने हाथ की पुश्त से *मुँह* ढाँक ले और क़याम में न हो तो बाँए हाथ की पुश्त से और बिला जुरुरत हाथ या कपड़े से मुँह ढांकना मकरुह है; * तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े से बाहर निकालना, औरत के लिये तक्बीरे तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े के अन्दर रखना; * जहाँ तक बन पड़े खाँसी को रोकना; * क़याम की हालत में दोनों पंजों के दरमियान चार अंगुल का फास्ला होना;

मकरुहाते नमाज़

यह चीज़ें नमाज़ में मकरुह है :-

* कोख पर हाथ रखना; * आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना; * कपड़े समेटना; * जिस्म के कपड़े से खेलना; * उगलियाँ चटखाना; * दाँए बाँए गरदन मोड़ना; * मर्द को जूड़ा गूँध कर नमाज़ पढ़ना; * अंगड़ाई लेना; * कुत्ते की तरह बैठना; * मर्द को सज्दे में हाथ जमीन पर बिछाना; * सज्दे में मर्दों के लिये पेट रानों से मिलाना; * बिगैर उज्र के चार ज़ानू (आल्ती पाल्ती) बैठना; * इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना; * कंकरियां हटाना मगर जबकि जुरूरी हो तो एक बार जाइज़ है; * सामने या सर पर तस्वीर होना; * तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना; * कन्धें पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना; * पेशाब, पाखाना या ज़्यादा भूक का तकाज़ा होते हुये नमाज़ पढ़ना; * सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना; * आँखे बन्द करके नमाज़ पढ़ना; * उँगलियाँ चटखाना या कैची बाँधना; * कमर पर हाथ रखना; * धात या चैन वाली घड़ी पहन कर नमाज़ पढ़ना; * फासिके मोअलिन के पीछे नमाज़ पढ़ना मस्लन जो बिला उज्र जमाअत या नमाज़ तर्क करता हो उसके पीछे नमाज़ मकरूह है;

मुफ़्सिदाते नमाज

इन चीजों के करने से नमाज़ फासिद हो जाती है :-

✤ बात करना खाह थोड़ी हो या बहुत कस्दन या भूल कर; ✤ जबान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना; ✤ छींकने वाले के जवाब में *यर ह मुकल्लाह कहना*; ✤ रंज की

खबर सुन कर *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिऊन* पूरा या थोड़ा सा पढ़ना या अच्छी खबर सुन कर *अलहम्दु लिल्लाह* कहना या अजीब चीज सुनकर *सुबहानल्लाह* कहना; ✤ दुःख तकलीफ़ की वजह से आह, ओह या उफ़ करना; ✤ अपने इमाम के सिवा किसी दुसरे को लकमा देना; ✤ कुरआन शरीफ देख कर पढ़ना; ✤ किरअत में ऐसी ग़लती करना जिससे नमाज़ फासिद हो जाती है (जिसकी तफ्सील बड़ी किताबों में लिखी है) ✤ अमले कसीर मस्लन ऐसा काम करना जिसे देखने वाला गुमान करे कि यह शख्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है मस्लन दोनों हाथों से काम करना; ✤ कस्दन या भूल कर कुछ खाना पीना; ✤ सीना किब्ला से फिर जाना; ✤ दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुरूफ़ निकल जाए; ✤ नमाज़ में हँसना; ✤ इमाम से आगे बढ़ जाना; (तिरमीज़ी)

जमाअत व इमामत का बयान

जमाअत की बड़ी ताकीद आई है और इसका सवाब बहुत ज़्यादा है यहाँ तक कि बे जमाअत की नमाज़ से जमाअत वाली नमाज़ का सवाब २७ गुना है। (मिश्कात जिल्द १ सफ्हा ९५)

मसअलह : मर्दो को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उज्र एक बार भी जमाअत छोड़ने वाला गुनहगार और सज़ा के लाइक है और जमाअत छोड़ने की आदत डालने वाला फासिक़ है जिसकी गवाही कुबूल नहीं की जायेगी; (रूददुल मुहतार)

मसअलह : जुम्आ व इदैन में जमाअत शर्त है यानी बगैर जमाअत यह नमाज़ें होंगी ही नहीं, तरावीह में जमाअत सुन्नते किफाया है यानी मुहल्ला के कुछ लोगों ने जमाअत से पढ़ी तो सबके ज़िम्मा से जमाअत छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमाअत छोड़ दी तो सबने बुरा किया रमज़ान शरीफ में वित्र को ज़माअत से पढ़ना मुस्तहब है इसके अलावा सुन्नतों और नफ्लों में जमाअत मकरूह है; (रूद्दुल मुहतार जिल्द १ सफ्हा ३७१)

मसअलह : अकेला मुक्तदी मर्द अगरचे लड़का हो इमाम के

बराबर दाहिनी तरफ खड़ा हो बाँए तरफ या पीछे खड़ा होना मकरूह है दो मुक्तदी हों तो पीछे खड़े हों इमाम के बराबर ख़ड़ा होना मकरूहे तन्ज़ीही है दो से ज़्यादा का इमाम के बगल में खड़ा होना मकरूहे तहरीमी है। (दुर्रे मुख़्तार जिल्द १ सफ्हा ३९१)

मसअलह : पहली सफ में और इमाम के करीब खड़ा होना अफ़जल है लेकिन जनाज़ा में पिछली सफ अफ़जल है; (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ३८३)

मसअलह : इमाम होने का सबसे ज़्यादा हक़दार वह शख्स है जो नमाज़ व तिहारत वगैरह के अहकाम सबसे ज़्यादा जानता हो फिर वह शख्स जो किरअत का इल्म ज़्यादा रखता हो अगर कई शख्स इन बातों में बराबर हों तो वह शख्स ज़्यादा हक़दार है जो ज़्यादा मुत्तकी हो अगर इस में भी बराबर हों तो ज़्यादा उम्र वाला फिर जिसके अख्लाक़ ज्यादा अच्छे हों फिर ज़्यादा तहज्जुदगज़ार ग़र्ज कि चन्द आदमी बराबर दर्जे के हों तो उनमें जो शरयी हैसियत से फौक़ियत रखता हो वही ज़्यादा हक़दार है;

मसअलह : फ़ासिके मोअ़लिन जैसे शराबी, ज़िनाकार-जुवाड़ी, सुदखोर, दाढ़ी मुड़ाने वाला या कटाकर एक मुश्त से कम रखने वाला इन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है और इन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूहे तहरीमी है और नमाज़ को दुहराना वाजिब है;

मसअलह : कादियानी, राफ्ज़ी, खार्जी, वहाबी और दूसरे तमाम बद मज़हबों के पीछे नमाज़ पढ़ना नाजाइज व गुनाह है अगर ग़लती से पढ़ली तो फिर से पढ़े अगर दुबारा नहीं पढ़ेगा तो गुनहगार होगा;

किरअत का बयान

क़िरअत यानी कुरआन शरीफ पढ़ने में इतनी आवाज़ होनी चाहिए कि अगर बहरा न हो और शोर व गुल न हो तो खुद अपनी आवाज़ सुन सके अगर इतनी आवाज़ भी न हुई तो किरअत नहीं हुई और नमाज़ न होगी। (दुर्रे मुख्तार जिल्द १ सफ्हा ३५९)

मसअलह : फज्र में और मग़रिब व ईशा की पहली दो रकअतों में और जुम्आ व ईदैन व तरावीह और रमज़ान की वित्र में इमाम पर जहर के साथ किरअत करना वाजिब है और मग़रिब की

तीसरी रकअत में और इशा की तीसरी और चौथी रकअत में और जुहर व अस्र की सब रकअतों में आहिस्ता पढ़ना वाजिब है :

मसअलह : जहरी नमाजों में अकेले को इख्तियार है चाहे ज़ोर से पढ़े चाहे आहिस्ता मगर जोर से पढ़ना अफ़जल है :
(दुर्रे मुख्तार सफ्हा ३५८)

मसअलह : कुरआन शरीफ उलटा पढ़ना मकरूहे तहरीमी है मसलन यह कि पहली रकअत में *कुल हु वल्लाह* और दुसरी में *तब्बत यदा* पढ़ना : (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ३६८)

मसअलह : दरमियान से एक छोटी सूरह छोड़कर पढ़ना मकरूह है जैसे पहली में *कुल हुवल्लाह* और दुसरी में *कुल अऊ जु बिरब्बिन्नास* पढ़ी और दरमियान में सिर्फ एक सूरह *कुल अऊ जु बिरब्बिल फ़लक़* छोड़ दी लेकिन हाँ अगर दरमियान की सूरह पहले से बड़ी हो तो दरमियान में एक सूरह छोड़कर पढ़ सकता है।

सज्दए सह्व

जो चीज़ें नमाज़ में वाजिब हैं अगर उनमें से कोई वाजिब भूल से छूट जाए तो उसकी कमी पूरी करने के लये *सज्दए सह्व* वाजिब है और इसका तरीक़ा यह है कि नमाज़ के आख़िर में *अत्तहियात* पढ़ने के बाद दाहनी तरफ सलाम फेरने के बाद दो सज्दा करे और फिर *अत्तहियात* और दुरुद शरीफ और दुआ पढ़ कर दोनों तरफ सलाम फेर दे :-

अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो सज्दए सह्व काफी नहीं बल्कि नमाज़ को दुहराना वाजिब है : (दुर्रे मुख्तार)

मसअलह : एक नमाज़ में अगर भूल से कई वाजिब छूट गए तो एक बार वही दो सज्दए सह्व के सबके लिए काफी हैं चन्द बार सज्दए सह्व की जुरुरत नहीं। (दुर्रे मुख्तार सफ्हा ४९७)

मसअलह : पहले क़अदह में *अत्तहियात* पढ़ने के बाद तीसरी रकअत के लये खड़े होने में इतनी देर लगा दी कि *अल्लाहुम्म सल्ले अ़ला मुहम्मदिन* पढ़ सके तो सज्दए सह्व वाजिब

है चाहे कुछ पढ़े या खामोश रहे दोनों सूरतों में सज्दए सह्व वाजिब है इसलिये ध्यान रखे कि पहले क़अदह में अत्तिहयात खत्म होते ही फौरन तीसरी रक़अत के लिए खड़ा हो जाए।

नमाज़ पढ़ने का सही तरीका

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि बा वज़ू क़िब्लारु दोनों पांव के पंजों में चार अंगुल का फासिला करके खड़ा हो और दोनों हाथ कान तक ले जाए कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएँ इस हाल में कि हथेलियाँ किब्लारुख हों फिर नीयत करके *अल्लाहु अकबर* اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ के नीचे बाँध ले और सना पढ़े।

सुब्हानकल्लाहुम्म व बि हम् दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व लाइलाह गैरुक

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

इसके बाद *अऊ ज़ुबिल्लाहि मिनश शैतानिर्रजीम* اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ फिर *बिस्मिल्लाहि र्रहमानिर्रहीम* بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़कर *अलहम्द शरीफ (सूरह फ़ातिहा)* पढ़े जब *सूरए फ़ातिहा* खत्म हो जाये तो आहिस्ता से *आमीन* कहे फिर इसके बाद *बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम* पढ़ कर कोयी सुरह या कुरआन मजीद की कम से कम एक बड़ी या तीन छोटी आयतें पढ़ें।

अब *अल्लाहु अकबर* कहता हुआ रुकूअ में जाए और घुटनों को हाथ से पकड़ ले इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों उगलियाँ खूब फैली हों पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर

हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार *सुब्हान रब्बियल अज़ीम* سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ कहे फिर *समीअल्लाहुलिमन हमीदह* سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और अकेले नमाज़ पढ़ता हो तो इसके बाद *रब्बनालकलहम्द* رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ कहे फिर *अल्लाहुअकबर* कहता हुआ सज्दा में जाए इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रक्खे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में नाक फिर पेशानी रक्खे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जम जाए और बाजुओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिन्डलियों से जुदा (अलग) रक्खे और दोनों पांव की सब उगलियों के पेट क़िब्लारु जमे हों और हथेलियाँ बिछी हों और उगलियाँ क़िब्ला को हों और कम से कम तीन बार *सुब्हानरब्बियल आअ़ला* سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे फिर सर उठाए फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके इसकी उगलियां क़िब्ला रुख करे और बायां क़दम बिछा कर उसपर खूब सीधा बैठ जाए और हथेलियाँ बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रक्खे फिर *अल्लाहु अकबर* कहता हुआ सज्दा में जाए और पहले की तरह सज्दा करके फिर सर उठाए फिर हाथ को घुटनों पर रखकर पंजों के बल खड़ा हो जाए अब सिर्फ *बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम* पढ़कर किरअत शुरु करे फिर पहले की तरह रुकुअ, सज्दा करके बायां कदम बिछा कर बैठ जाए और तशहहुद पढ़े

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवा तु वत्तैयिबातु ० अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरका तुहू अस्सलामु अलैना व अला इबा दिल्लाहिस्सालिहीन ० अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَ عَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तशह्हुद पढ़ते हुये जब कलिमा *ला* के करीब पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच की उगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छंगुलिया और उसके पास वाली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़े *ला* पर क़लिमा की उगली उठाए मगर इधर उधर न हिलाये और क़लिमए *इल्ला* पर गिरा दे और सब उगलियाँ फौरन सीधी कर ले अब अगर दो से ज्यादा रकअतें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और उसी तरह पढ़े मगर फ़र्जों की उन रकअतों में *अलहम्दु* के साथ *सूरह* मिलाना जुरुरी नहीं अब पिछला क़ाअदह जिसके बाद नमाज़ खतम करेगा उसमें तशह्हुद के बाद *दुरुद शरीफ* पढ़े-

अल्लाहुम् सल्ले अ़ला सैय्यिदिना मुहम्मदिवं व अला आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन् कमा सल्लै त अ़ला सैय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आले सैय्यिदना इब्राही म इन्नक हमीदुम् मजीद ० अल्लाहुम्म बारिक अ़ला सैय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन् कमा बारक् त अ़ला सैय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आले सैय्यिदिना इब्राही म इन्न क हमी दुम्मजीद

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ
اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ط اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ وَ
عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ط

फिर *दुआए मासूरह* पढ़े:

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लमतु नफ्सी जुल्मन कसीरँव व ला यग़फिरुज़् जुनूब इल्ला अन्त फ़ग़फिरली मग़फिरतम् मिन् इनदिक वरहमनी इन्न क अन्तल गफूरुर्रहीम ०

इसके बाद पहले दाहिने कन्धे की तरफ मुँह करके *अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि* السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहे फिर बाँये कन्धे की तरफ मुंह करके सलाम कहे। अब नमाज़ पूरी हो गयी। सलाम करने के वक्त यह ख्याल करें कि मैं फरिशतों को सलाम कर रहा हूँ। अब हाथ उठाकर जो जी चाहे अल्लाह से दुआ मांगे और दुआ खत्म करने के बाद दोनों हाथ मुंह पर फेर ले।

जरूरी याददास्त फर्ज़ नमाज़ की तीसरी और चौथी रकअत में *अल्हम्दु* के बाद सूरत नहीं पढ़ी जाती। सिर्फ *अल्हम्दु* पढ़कर रुकू और सजदह कर ले और आखरी रकअत के बाद बैठकर *अत्तहिह्यात* पढ़े और इसके बाद *दुरूद शरीफ* और दुआ पढ़ कर सलाम फेरे और हाथ उठाकर दुआ मांगे।

सलाम फेर कर इमाम दायें या बायें तरफ मुँह कर ले इसलिए कि सलाम के बाद मुक्तदियों की तरफ पीठ करके बैठना मक्रूह है। फ़र्ज़ नमाज़ के बाद खास तौर से दुआ कुबूल होती है। सलाम फेर कर अल्लाह तआला से दीनी व दुनियावी हाजात और जरूरतों के लिये दुआ करे।

नमाज़ के बाद की दुआऐं व अज़कार

इस्तग़फार-

अस्तग़फिरुल्लाह रब्बी मिन् कुल्ले जम्बिवँ व अतूबु इलैहि

इसके बाद जो दुआ चाहे पढ़े।

अल्ला हुम्म अन्तस्सलामु व मिनक स्सलामु व इलै-क-यरजियुस्सलामु फहय्यिना रब्बना बिस्मिल्लामि व अद् खिल्ना दारस्सलामि तबारक् त रब्बना व तआलै त या ज़ल्जलालि वल् इक्रामि

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ

السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ
وَتَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط

जिन फ़र्जो के बाद सुन्नतें पढ़नी हैं उन फ़र्ज़ों के बाद मुख्तसर सी दुआ करे जैसा कि ऊपर दुआ लिखी गयी फिर जल्दी सुन्नतें पढ़े वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जायेगा और बाकी अज़कार व वजाईफ सुन्नतों के बाद पढ़े और जिन फ़र्जो के बाद सुन्नतें नहीं उन के बाद यह अज़कार भी हैं।

अजकार :- हर नमाज़ के बाद ३३ बार ***सुब्हानल्लाहि*** سُبْحَانَ اللّٰهِ ३३ बार ***अल्हम्दु लिल्लाहि*** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ३४ बार ***अल्लाहु अकबर*** اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़े-

आयतुल्कुर्सी- फ़र्ज़ नमाज़ो के बाद ***आयतुल्कुर्सी*** पढ़ने की बड़ी फज़ीलत है इसको भी पढ़े।

अल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु ० ला ता खुजुहू सि न तवँ व ला नौम ० लहू मफिस्समावा ति व माफिल अर्दी मन ज़ल्लज़ी यश् फ़ अो इन् द हू इल्ला बि इज़्निहि यअ़ ल मु मा बै न अयदीहिम व मा खल् फ़ हुम वला युहीतू न बिशयइम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा अ व सि अ कुर्सियुहुस्समावाति वल अर्द ० वला य ऊ दु हू हिफ़्जुहुमा व हुवल अ़लीयुल अ़ज़ीम ०

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِیْمُ

नमाज़े वित्र

नमाज़े वित्र वाजिब है। अगर यह छूट जाये तो इसकी कज़ा लाजिम है। इसका वक्त ईशा की फर्ज़ के बाद से सुब्हे सादिक तक है। बेहतर यह है कि आखिर रात में तहज्जुद के साथ पढ़ी जाये लेकिन जिसको खौफ हो कि उठ नहीं सकेगा वह ईशा की नमाज़ के साथ सोने से पहले पढ़ ले। इसकी तीन रकअतें हैं। दो रकअ़त पढ़कर क़ाअदह किया जाये और तशह्हुद पढ़कर खड़ा हो जाये। तीसरी रक़अत में *बिस्मिल्लाह, सूरह फातिहा* और *सूरत* पढ़कर दोनों हाथ कानों तक उठाये और *अल्लाहु अकबर* कहता हुआ हाथ बाँध ले और दुआए कुनूत आहिस्ता पढ़े कि यह वाजिब है।

दुआए कुनूत

अल्लाहुम्म इन्ना नस त इ नु क व नस्तग़्फ़िरु क व नुअ् मिनु बि क व न त वक्कलु अ़लै क व नुस्नी अ़लैकल ख़ैर व नशकुरु क वला नक्फ़ुरु क व नख़् ल ओ़ व नतरुकु मँय्यफ्जुरु क ० अल्लाहुम्म ईय्या क नअ़बुदु व ल क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै क नसआ़ व नहफिदु व नरजु रह म त क व नख़्शा अ़ज़ा ब क इन्न अ़ज़ा ब क बिल कुफ्फारि मुल् हिक०

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَ
نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا
نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ط

अगर दुआए कुनूत याद न हो तो यह दआ पढ़े
रब्बना आतिना फिद् दुनियाँ ह स न तवँ व फ़िल आख़ि र ति ह स न तवँ व क़िना अज़ाबन्नार० رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

अगर यह भी याद न हो तो तीन बार यह पढ़े ***अल्लाहुम्मग्फ़िर लना०*** नमाज़े वित्र पढ़ने के बाद तीन बार यह पढ़े ***सुब्हानुल् मलिकिल्कुद्दुस***

मसअला :- अगर दुआए कुनुत पढ़ना भूल गया या किसी को दुआए कुनूत याद न हो और रुकूअ में चला गया तो वापस न लौटे बल्कि सज्दए सह्व कर ले।

मसअला :- भूल कर पहली या दूसरी रक़अत में ***दुआए कुनूत*** पढ़ ली तो तीसरी में फिर पढ़े।

औरतों की नमाज़

औरतें तकबीरे तहरीमा के वक्त कानों तक हाथ न उठायें बल्कि मूढ़े तक उठायें। हाथ नाफ के नीचे न बाँधें बल्कि बायीं हथेली सीना पर छाती के नीचे रखकर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली रक्खें, रुकुअ में ज़्यादा न झुकें बल्कि थोड़ा झुकें यानी सिर्फ इस कद्र झुकें कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाए पीठ सीधी न करें और घुटनों पर जोर न दें बल्कि महज हाथ रख दें और हाथों की उगलियां मिली हुयी रक्खें और पांव कुछ झुका हुआ रक्खें। मर्दों की तरह खूब सीधा न कर दें। औरतें सिमट कर सिज्दा करें यानी बाज़ू करवटों से मिलादें और पेट रानों से और रान पिण्डलियाँ से और पिंडलियाँ जमीन से और काअदह में बाँए कदम पर न बैठें बल्कि दोनों पांव दाहिनी तरफ निकाल दें और बायीं सुरीन पर बैठें। औरतें भी खड़ी हो कर नमाज पढ़ें। बहुत सी औरतें फ़र्ज़ और वाजिब व सुन्नत सारी नमाज़ें बैठकर पढ़ती हैं यह बिल्कुल गलत तरीका है, नफ्ल के सिवा कोई नमाज़ भी बिला उज्र के बैठ कर पढ़नी जाइज़ नहीं। फ़र्ज और वाजिब जितनी नमाजें बिगैर ***उज्रे शरई*** बैठ कर पढ़ चुकी हैं उनकी

क़ज़ा करें और तौबा करें। औरत मर्द की इमामत हरगिज नहीं कर सकती और सिर्फ औरतें जमाअत करें यह मकरूहे तहरीमी और नाजाइज है। औरतों पर जुम्आ और इदैन की नमाज वाजिब नहीं। पंज वक्ता नमाज़ों के लिए भी मस्जिद में जाना मना है।

१९ सूरह

सूरए फातिहा : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी न ० अर्रहमानिर रहीमि ० मालि कि यौमिद्दीनि ० इय्या क नअबुदु व इय्या क नस्तइनु ० इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ी म ० सिरातल्लज़ी न अनअम् त अलैहिम ० गैरिल मग़दूबि अलैहिम व लद्दाल्लीन० (आमीन)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧

सूरए इन्शिराह : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम अलम नश्रह ल-क सद्रक ० व वदअना अन-क विज़रक ० ल्लज़ी अन-क-द ज़ेहरक ० व रफ़अना ल-क जिक्रेक ० फ-इन-न मअल उसरि युसरा ० इन-न मअल उसरि युसरा० फ़ इज़ा फ़रग़-त फ़नसब ० व इला रब्बि-क फ़रग़ब०

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢
الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ فَاِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦ فَاِذَا
فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

सूरए कद्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
इन्ना अन्-ज़ल्-नाहु फ़ी लैलतिल् कद्रि० व
मा अद्-रा-क मा लैलतुल् कद्रि० लैलतुल
कद्रि खैरुम् मिन् अल्फ़ि शहरिन्
तनज़्ज़लुल्-मलाइकतु वर-रूहु फ़ीहा
बिइज़्नि रब्बिहिम मिन् कुल्लि अम् रिन् ०
सलामुन् हि-य-हत्ता मत्लइल फ़ज्रि०

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾
لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ
فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

सूरए ज़िलज़ाल : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
इज़ा जुल ज़िलतिल अर्दु ज़िल ज़ा लहा ० व
अख़ र जतिल अर्दु असक़ा लहा ० व क़ा लल
इनसानु मालहा ० यौ मए ज़िन तु हद्दिसु
अख़बा रहा ० बि अन्-न रब्ब क औ हा लहा
० यौ मए ज़ीं यसदु रुन्नासु अशता तल ० लि यु
रौ अअ़् मा लहुम ० फ़ मँय्याअ़्मल मिस क़ा ल
ज़ र्रतिन खै रँय्य रह ० व मँय्याअ़्मल मिसक़ा
ल ज़र्रतिन शर रँय्य रह०

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ
اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ
اَشْتَاتًا ۵ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾

सूरए आदियात : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
वल आदियाति दब हन ० फ़ल मूरियाति क़द
हन ० फ़ल मुग़ी राति सुब हन ० फ़ अ सर न
बिही नक़ अन ० फ़ व सत् न बिही जम अन
० इन्नल इन्सा न लि रब्बि ही ल क नूद ० व
इन्नहु अ़ला ज़ालि क ल शहीद ० व इन्नहू लि
हुब्बिल ख़ैरि ल शदीद ० अ फ़ला याअ् लमु
इज़ा बु अ़् सि र मा फ़िल् क़ुबूरि ० व हुस्सि ल
मा फ़िस् सुदूरि ० इन्-न रब्ब हुम बि हिम यौ
मए ज़िल् ल ख़बीर०

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ
صُبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾
اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى
ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ﴿۸﴾
اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ
مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ
لَّخَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

सूरए क़ारिआ : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
अल क़ारि अ़ तु ० मल क़ारिअ़ह ० व मा अद्रा
क मल क़ा रिअह ० यौ म यकू नुन्नासु कल
फ़रा शिल मब सूस ० व तकूनुल् जिबालु कल
ईह निल मन फ़ूशि ० फ़ अम्मा मन् स क़ु लत्
म वा ज़ी नुहू ० फ़ हु व फ़ी ई शतिर रादि यह
० व अम्मा मन ख़फ़्फ़त् मवाज़ी नुहू ० फ़
उम्मुहू हा वीयह ० वमा अदरा क माहियह ०
नारून हामियह०

اَلْقَارِعَةُ ۝١ مَا الْقَارِعَةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣
يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝٤ وَتَكُوْنُ
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝٥ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨
فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝١٠ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

सूरए तकासुर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
अल्हा कुमुत तकासुरु ० हत्ता ज़ुरतुमुल् मक़ा बि र ० कल्ला सौ फ़ ताअ्लमू न ० सुम्-म कल्ला सौ फ़ ताअ् ल मू न ० कल्ला लौ ताअ् लमू न इल् मल यक़ीन ० ल त र वुन्नल जही म ० सुम्-म ल त र वुन्न हा ऐनल यक़ी न ० सुम्-म ल तुस् अ लुन्-न यौ मई ज़िन अनिन् नईमि०

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ۝٣ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ
عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا
عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

सूरए अस्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
वल अस्रि ० इन्नल् इन्सा न लफ़ी ख़ुसरिन ० इल्लल्लज़ी न आ मनू व अ मिलुस् सालिहाति व त वा सौ बिल हक़्क़ ० व त वा सौ बिस् सब् रि०

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

सूरए हु म ज़ह : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
वै लुल लि कुल्लि हु म ज़तिल लु म ज़ति ० निल्लज़ी ज म अ़ मा लौंवँ व अ़दद दह ० यह सबु अन्-न मा लहु अख़ ल दह ० कल्ला ल युम ब ज़न्न फ़िल हु त मति ० व मा अदरा क मल् हु त मह ० नारुल्ला हिल् मू क़ द तुल ० लती तत्-त लिअ़ो अ़लल् अफ़ इ दह० इन्नहा अ़लैहिम् मुअ़् स द त ० फ़ी अ़ म् दिम मु मद् द दह०

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ
اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَآ
اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِىْ تَطَّلِعُ
عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

सूरए फ़ील : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ़ ल रब्बु क बि अस्हा बिल फ़ीलि० अ लम् यजअ़्ल कै दहुम् फ़ी तदलीलिँव० व अर स ल अ़लै हिम् तैरन अबाबील ० तरमी हिम् बि हिजा र तिम् मिन् सिज्जील ० फ़ ज़अ़ ल हुम् क़अस् फ़िम् मा कूल०

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ﴿١﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ
كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ﴿٢﴾ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ﴿٣﴾
تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿٥﴾

सूरए कुरैश : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
ले ईला फ़ि कुरैशिन ० ई ला फ़ि हिम् रिह लतश् शिताए वस्सैफ़० फ़ल याअ़् बुदू रब्-ब हाज़ल बैतिल ० लज़ी अ़त् अ़ म हुम् मिन् जू ईवँ० व आ म न हुम् मिन् ख़ौफ़०

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ﴿١﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ﴿٢﴾
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ﴿٣﴾ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ
جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾

सूरए माअ़ून : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
अ र ऐ तल्लज़ी यु कज़्ज़िबु बिद्दीनि ० फ़ ज़ालि कल लज़ी य दुअ़् ऊल यती म ० वला य हुद्दु अ़ला त आ मिल् मिसकीनि० फ़वै लुल् लिल् मुसल्ली नल् ० लज़ी न हुम् अ़न सला तिहिम् सा हू नल् ० लज़ी न हुम् यूरा ऊ न ० व यम् न ऊ नल् माऊ न०

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ﴿١﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ
الْيَتِيْمَ ﴿٢﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ

لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝

सूरए कौसर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
इन्ना आअ़्तैना कल् कौसर ० फ सल्लि लिरब्बि क वन्हर ० इन्-न शानि अ क हुवल अब्-तर ०

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

सूरए काफ़िरून : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
कुल या अय्युहल काफ़िरू न ० ला आअ़्बुदु मा ताअ़् बुदू न ० व ला अनतुम् आबिदू न मा आअ़्बुद ० व ला अना आबिदुम् मा अ बत्तुम ० वला अनतुम आबिदू न मा आअ़्बुद ० लकुम दीनुकुम वलि यदीन०

قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

सूरए नस्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
इज़ा जा अ नस्रुल्लाहि वल फ़तहु० व र ऐतन्ना स यद खुलू न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा० फसब्बिह बिहम्दि रब्बि क वस्तग़फ़िर हु- इन्नहू का न तव्वाबा०

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ
يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

सूरए लहब : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
तब्बत यदा अबी ल ह बिवँ व तब्ब ० मा अग़्ना
अ़न्हु मालुहू व मा क स ब ० स यस्ला नारन
ज़ा त ल ह बिवँ ० वम्र अतुहू हम्मा लतल् ह
त़बि० फ़ी जीदिहा हब्लुम् मिम्मसद०

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا
كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ۭ
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

सूरए इख़्लास : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
कुल् हु वल्लाहु अहद ० अल्लाहुस़् स़मद ० लम्
यलिद् वलम् यूलद् ० वलम् यकुँ ल्लहु
कुफुवन् अहद ०

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

सूरए फ़लक़ : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
कुल् अऊजु बिरब्बिल् फ़ ल क़ि ० मिन् शर्रि
मा ख़ ल क़ ० व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा
वक़ब ० व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल्

ऊक़दि ० व मिन शर्रि हासिदिन् इज़ा हसद ०

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ
مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
فِى الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

सूरए नास : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम *कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि ० मलिकिन्नासि इलाहिन्नासि ० मिन शर्रिल वस्वासिल-ख़न्नासिल् ० लज़ी यु वस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि ० मिनल् जिन्नति वन्नास ०*

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ
النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِىْ
يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

जनाज़ा का बयान

मय्यित के नहलाने का तरीका

मय्यित को नहलाना ***फ़र्ज़े किफाया*** है बाज लोगों ने गुस्ल दे दिया तो सब से साकित हो गया नहलाने का तरीका यह है कि जिस चारपायी या तख्त या तख्ता पर नहलाने का इरादा हो उसको तीन या पाँच या सात बार धुनी दें यानी जिस चीज में वह खुश्बू सुलगती हो उसे उतनी बार चारपाई वगैरह के गिर्द फिराए और उस पर मय्यित को लिटा कर नाफ से घुटने तक किसी कपड़े से छुपा दे फिर नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले इस्तिन्जा कराए फिर नमाज के ऐसा वुज़ू कराए

यानी मुँह फिर कुहनियों समीत हाथ धोए फिर सर का मसह करे फिर पाँव धोए मगर मैइत के वुज़ू में गट्टों तक पहले हाथ धोना और कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है हाँ कोयी कपड़ा या रूई की फरेरी भिगोकर दाँतों और मसूढ़ों और होंटो, नथनों पर फेर दे फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो गुल खैरु से धोये यह न हो तो पाक साबुन बेसन या यह न हो तो खाली पानी ही काफी है फिर बाँए करवट पर लिटा कर सर से पाँव तक बेरी का पानी बहाए कि तख्ता तक पहुँच जाए फिर दाहनी करवट पर लिटा कर यूँ ही करें और बेरी के पत्ते का उबाला हुआ पानी न हो तो खालिस पानी नीम गर्म काफी है फिर टेक लगा कर उठाए और नर्मी के साथ नीचे को पेट पर हाथ फेरे अगर कुछ निकले तो धो डाले वुज़ू और गुस्ल दुबारा न कराए फिर आखिर में सर से पांव तक काफूर का पानी बहाए फिर इसके बदन को किसी कपड़े से धीरे धीरे पोंछ दें।

इन्तिबाह :- एक बार सारे बदन पर पानी बहाना ***फर्ज़*** है और तीन मरतबा ***सुन्नत*** जहाँ गुस्ल दें मुस्तहब यह है कि परदा कर लें कि सिवाए नहलाने वालों और मददगारों के दुसरा न देखे।

मसअलह् :वुज़ू पहले होना चाहिये नहलाने के बाद वुज़ू ग़लत है।

कफ़न का बयान

मय्यित को ***कफ़न*** देना ***फर्ज़ किफ़ाया*** है। ***कफ़न*** के तीन दर्जे होते हैं ***(१) ज़ुरुरी (२) किफ़ायत (३) सुन्नत***, मर्द के लिये ***कफ़ने सुन्नत*** तीन कपड़े हैं, ***लिफाफा, एजार, कमीज*** और औरत के लिए ***कफने सुन्नत*** पांच कपड़े हैं- ***लिफाफा, एज़ार क़मीज़, ओढ़नी*** और ***सीना बन्द***।

कफने किफायत मर्द के लिए दो कपड़े हैं ***लिफाफा व एजार*** औरत के लिए ***कफन किफायत*** तीन कपड़े हैं ***लिफाफा, एजार, ओढ़नी*** या ***लिफाफा, कमीज, ओढ़नी***।

कफने जुरूरत मर्द औरत दोनों के लिये जो मयस्सर आए और कम से कम इतना तो हो कि सारा बदन ढ़क जाए।

(आलमगीरी वगैरह)

कफ़न पहनाने का तरीका

मय्यित के गुस्ल देने के बाद बदन किसी पाक कपड़े से आहिस्ता से पोंछ ले ताकि ***कफ़न*** तर न हो और ***कफ़न*** को एक या तीन या पाँच या सात बार धूनी दे ले इससे ज्यादा नहीं फिर ***कफ़न*** यूँ बिछाए कि पहले बड़ी ***चादर*** फिर ***एजार (तहबन्द)*** फिर ***कफनी*** फिर मय्यित को उस पर लिटाए और ***कफनी*** पहनाए और ***दाढ़ी*** और तमाम बदन पर खुश्बू मले और ***मवाजए सुजूद*** यानी माथे नाक, हाथ, घुटने और कदम पर काफूर लगाए फिर ***एजार (तहबन्द)*** लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से फिर ***लिफाफा*** लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से ताकि दाहिना ऊपर रहे और सर और पाँव की तरफ बाँध दें कि उड़ने का डर न रहे औरत को कफ़न पहनाकर उसके बाल के दो हिस्से करके कफनी के ऊपर सीना के ऊपर डाल दे और ओढ़नी आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर लाकर मुँह पर मिस्ले नकाब के डाल दे कि सीना पर रहे कि इसकी लम्बायी आधी पीठ से सीना तक है और चौड़ायी एक कान की लौ से दुसरे कान की लौ तक और यह जो लोग किया करते हैं कि जिन्दगी की तरह उढ़ाते हैं, ग़लत व खिलाफे सुन्नत है फिर बदस्तूर एजार व लिफाफा लपेटे फिर सबके ऊपर सीना बन्द पिस्तान के ऊपर से रान तक लाकर बाँधे।

नमाज़े जनाज़ा का तरीका

जनाजा की नमाज ***फ़र्ज़े किफ़ाया*** है कि एक ने भी पढ़ली तो सब बरीउज़्ज़िमा हो गये वरना जिस जिसको खबर पहुंची थी और न पढ़ी गुनहगार हुआ इसकी ***फ़र्ज़ियत*** का जो इनकार करे वह काफ़िर है।

नमाजे जनाजा के पहले यूँ नीयत करे :

नवैतु अन ओ वदिद य लिल्लाहि तआला अर ब अ तकबीराति सलातिल जना ज़ति अस्सना ओ लिल्लाहि तआला वद्दआओ लिहाज़ल मय्यिति इक्तदयतु बिहाज़ल इमामि मु त वज्जिहन एला जि ह तिल काअबतिश् शरीफ़ति अल्लाहु अकबर

نَوَیْتُ اَنْ اُؤَدِّیَ لِلّٰهِ تَعَالٰی اَرْبَعَ تَکْبِیْرَاتِ صَلٰوۃِ الْجَنَازَۃِ ۝ اَلثَّنَآءُ لِلّٰهِ تَعَالٰی وَالدُّعَآءُ لِھٰذَا الْمَیِّتِ اِقْتَدَیْتُ بِھٰذَا الْاِمَامِ مُتَوَجِّھًا اِلٰی جِھَۃِ الْکَعْبَۃِ الشَّرِیْفَۃِ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ط

फिर कान तक हाथ उठाकर ***अल्लाहु अकबर*** कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ के नीचे हस्बे दस्तूर बाँध ले और सना पढ़े यानी

सुब्हा नकल्लाहुम्म व बिहम्दि क व तबारकस्मु क व तआला जद्दु क व जल्ल सनाओ क व लाइला ह गैरु क

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَجَلَّ ثَنَآؤُکَ وَلَآ اِلٰهَ غَیْرُکَ ط

फिर बगैर हाथ उठाए ***अल्लाहु अकबर*** कहे और दुरुद शरीफ पढ़े बेहतर दुरुद शरीफ वही है जो नमाज में पढ़ा जाता है अगर कोयी दूसरा दुरुद पढ़े जब भी हर्ज नहीं फिर बगैर हाथ उठाए ***अल्लाहु अकबर*** कहे और इसके बाद अपने और मय्यित के लिए नीज तमाम मोमिनीन व मुमिनात के लिए, ***दुआए जनाज़ा***, पढ़कर ***अल्लाहु अकबर*** कह के दोनों हाथ छोड़ दे और दोनों तरफ सलाम फेर दे।

नोट: मय्यित अगर नाबालिग लड़का है तो तीसरी तकबीर के

बाद वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़का के लिए है और अगर नाबालिग लड़की है तो वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़की के लिए है और जिसे याद न हो बच्चों के लिये भी बड़ी मैइत की दुआ पढ़ले।

क़ब्र में मैय्यित के उतारने वगैरह की दुआ

मय्यित की आखें बन्द करते वक्त, उसके आअज़ा को सीधा करते वक्त गुस्ल के वक्त कफन पहनाने के वक्त, चारपायी या ताबूत वगैरह पर रखते वक्त और क़ब्र में मय्यित के उतारते वक्त यह दुआ मुस्तहब है।

बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम.

بِسْمِ اللّٰہِ وَعَلٰی مِلَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

कब्र पर मिट्टी देते वक्त यह पढ़े

पहली दफा – *मिनहा खलक़नाकुम०* مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ

दूसरी दफा – *व फीहा नुईदुकुम०* وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ

तीसरी दफा – *व मिनहा नुखरिजुकुम तारतन उख़्रा*

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰی

दुआए जनाज़ह

बड़ी मैय्यित के लिए :

अल्लाहुम्मग़ फिरलि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़ क रिना व उनसाना अल्लाहुम्म मन् अहयैय त हू मिन्ना फ़ अहयिही अ़लल् इस्लामि व मन् त वफ़्फ़य तहू मिन्ना फ़ त वफ़्फ़हू अ़लल ईमान

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

नाबालिग़ लड़के के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अलहु लना फरतँव वज़्अलहु लना अज्रँव व जुख़्रँव वज़् अल्हु लना शाफ़िऔं व मुशफ़्फ़अन्०

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

नाबालिग़ लड़की के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अ़लहा लना फ र तँव वज् अ़ल्हा लना अज़् रँव व जुख़् रँव वज् अ़ल्हा लना शाफ़िअतँव व मुशफ़्फ़अ़तन् ०

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

दुआए अक़ीक़ह

अल्लाहुम्म हाज़िही अक़ीक़तुब्नी फुलानिन द मु हा बि द मिही व लहमुहा बि लहमिही व अ़ज़मुहा बि अ़ज़्मिही व जिलदुहा बिजिल्दिही व शअ़रुहा बि शअ़रिही अल्लाहुम्मज्ज़अ़ल्हा फिदाअल लि इब्नी मिनन्नार बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ابْنِيْ فُلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِّابْنِيْ مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अगर बाप *जिब्ह* करने वाला हो तो ऐसा कहे वरना दुसरा *इब्नी* की जगह *फुलाँ* यानि उस लड़के का नाम वालिद के नाम के साथ ले – *(जैसे मुहम्मद औन कादरी बिन मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादरी)*

लड़की के लिए यह दुआ पढ़े :

अल्लाहुम्म हाज़िही अक़ीक़तु बिन्ती फुला न तिन दमुहा बि दमिहा व लहमुहा बि लहमिहा व अज़मुहा बि अज़मिहा व जिल्दुहा बि जिल्दिहा व शअ़रोहा बि शअरिहा अल्लाहुम्मज़ अलहा फ़िदाअल लि बिन्ती मिनन् नार – बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِيْ فُلَانَةٍ دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِّبِنْتِيْ مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नीयते कुर्बानी

इन्नी वज्जहतु वजहि य लिल्लज़ी फ त रस्समावाति वल अर द हनीफँव व मा अना मिनल मुशरिकीन। इन्न सलाति व नुसुकी व महया य व म माती लिल्लाहि रब्बिल आ ल मी न। ला शरी क लहू व बिज़ालि क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन् क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

पढ़कर *ज़िब्ह* करे। *ज़िब्ह* के बाद अगर अपनी तरफ से कुरबानी की है तो इस तरह कहे-

अल्लाहुम्म तक़ब्बल्हु मिन्नी कमा तक़ब्बल त मिन ख़लीलि क सय्यिदिना इब्राही म व हबीबि क सय्यिदिना मुहम्मदिन अलैहिस्सलातु वसल्लाम्०

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ
وَحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ط

अगर किसी दुसरे के नाम से करे तो लफ्ज़ ***मिन्नी*** की जगह ***मिन फुलाँ इब्न फुलाँ*** कहे ***(जैसे मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादिरी इब्न एजाज़ हुसैन कादिरी)***

रमजानुल्मुबारक

ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये। (कुरआन) अहादीसे मुबारक में रमजान की बेशुमार फ़ज़ीलतें आयी हैं, निहायत खैर व बरकत वाला महीना है। इसमें किसी अमले मुस्तहब का सवाब दूसरे महीने के फ़र्ज़ के बराबर है और फ़र्ज़ का सवाब ७० के बराबर होता है। रोज़े की फ़ज़ीलत के लए यह काफी है कि हदीस शरीफ में है कि अल्लाह ने फरमाया! रोज़ा मेरे लिए है और इसकी जज़ा मैं दूँगा।

रोज़ह की नीयत :

नवैतु अन् असू मु ग़दृदन् लिल्लाहि तआला मिन् फ़र-द रमदा-न हा ज़ा०

इफ़्तार की दुआ :

अल्ला हुम्म ल-क सुम्तु व बि-क आ मन्तु व अलै-क तवक्कल्तु व अ़ला रिज़्क़ि-क अफ़ तरतु०

और इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़े :

ज़ ह बज़् ज़म्मा ओ वब तल्लतिल् ओ़रूकु व सबतल् अज्रू इन्शा अल्लाहु०

तरावीह का बयान

मस्अला : मर्द व औरत सब के लिए तरावीह *सुन्नते मुअक्किदह* है इस का छोड़ना जाइज नहीं औरतें घरों में अकेले अकेले तरावीह पढ़ें। मस्जिदों में न जायें। घर में भी जमाअ़त से न पढ़ें कि औरतों की जमाअ़त *मकरूहे तहरीमी* व *गुनाह* है। (दुर्रे मुख़्तार जिल्द १ पृ० ४७२) तरावीह बीस रकअ़तें दस सलाम से पढ़ी जायें यानी हर दो रकअ़त पर सलाम फेर दे और हर चार रकअ़त पर इतनी देर बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रकअ़तें पढ़ी हैं और इख़्तियार है इतनी देर चाहे चुप बैठा रहे चाहे कलिमा या दुरूद शरीफ पढ़ता रहे या कोयी भी दुआ पढ़ता रहे आम तौर पर यह दुआ पढ़ी जाती है।

तस्बीह तरावीह

सुब्हा न ज़िल् मुल्कि वल् म ल कूति सुब्हा न ज़िल इज़्ज़ति वल् अ़ज़मति वल् हैबति वल् क़ुदरति वल् किबरियाए वल् ज बरुति सुब्हानल् मलिकिल् हय्यिल् लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल् मलाए कति वर्रूहु० अल्लाहुम्म अजिरना मिनन्नारि या मुजीरू या मुजीरू या मुजीरू बि रहमति-क या अर हमर्राहिमीन०

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی ا
لْعِزَّةِ وَالْعَظْمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ
وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ
وَالرُّوْحِ ط اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ
يَا مُجِيْرُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ط (در مختار ج ۱ ص ۲۴۲)

नौ (९) मिनट में नौ (९) कुरान पाक और एक हज़ार (१०००) आयतों के बराबर सवाब

१. सूरए फ़ातिहा (३) तीन बार पढ़ने का सवाब दो बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मज़हरी)।

२. आयतुल्कुर्सी चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर रहमान)

३. सूरए क़द्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन पढ़ने के बराबर है। (फिरदौस वैलमी)

४. सूरए ज़िल्ज़ाल दो (२) बार पढ़ने का सवाब एकबार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ़)

५. सूरए आ़दियात दो (२) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर्रहमान)

६. सूरए तकासुर एक (१) बार पढ़ने का सवाब एक हजार (१०००) आयतों के पढ़ने के बराबर है। (मिश्कात शरीफ़)

७. सूरए काफिरून चार (४) बार पढ़ने का

सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है।

(तिरमिज़ी शरीफ़)

८. सूरए नस्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिजी शरीफ़)

९. सूरए अख्लास तीन (३) बार पढ़ने का सवाब एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है।

(बुखारी शरीफ)

बस इतना अगर कोई पढ़ ले तो ***नौ (९) कुरआन शरीफ़*** और ***एक हज़ार (१०००) आयतों*** के पढ़ने के बराबर सवाब पा सकता है।

इन सूरतों को पढ़कर आप अपने खानदान के मरहूमीन और तमाम मुसलमान मरहूमीन की रूह को इसाले सवाब कर सकते हैं।

तरीक़ए फ़ातिहा व न्याज़

मुसलमानों को दुनिया से जाने के बाद जो सवाब कुरआन मजीद का तन्हा या खाने वगैरह के साथ पहुँचाते हैं उर्फ मे इसे ***फातिहा*** कहते हैं कि इसमें सूरए फ़ातिहा पढ़ी जाती है। औलियाए किराम को जो इसाले सवाब करते हैं उसे ताअ्ज़ीमन ***नज़्र व न्याज़*** कहते हैं। इसका तरीका यह है -

वज़ू करके पहले तीन बार या ज्यादा ***दुरूद शरीफ़*** पढ़े फिर एक बार ***सूरए फातिहा*** पढ़े फिर एक बार ***आयतुलकुरसी*** पढ़े फिर तीन बार या सात बार या ग्यारह बार ***सूरए अख्लास*** पढ़े फिर तीन बार या ज्यादा ***दुरूद शरीफ़*** पढ़े। इसके बाद दोनों हाथ उठा कर अ़र्ज़ करे कि ***इलाही!*** मेरे इस पढ़ने (अगर खाना, कपड़ा वगैरह भी हों तो उनका नाम भी शामिल करे और इस पढ़ने और इन चीजों के देने पर) जो सवाब मुझे अ़ता हो उसे मेरे अ़मल के लाएक न दे बल्कि अपने करम के लाएक़ अ़ता फ़रमा और इसे मेरी तरफ से फुँला वलीयल्लाह मसलन् ***हुज़ूर पुरनूर सय्यिदिना गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु*** की

बारगाह में नज्र पहुँचा और उनके आबाए किराम और मशाइखे एजाम व औलाद अम्जाद, मुरीदीन व मुहिब्बीन और मेरे माँ बाप और *फुलाँ और फुलाँ* (जिसको सवाब पहुँचाना हो उसका नाम ले) और *सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम* से रोजे क़यामत तक जितने मुसलमान हो गुज़रे या मौजूद हैं या कयामत तक होंगे सबको पहुँचा। *आमीन या रब्बल आ़लमीन बि रहमति क या अरहमर राहिमीन०* (अहकामे शरीअ़त)

मस्नून व मक़बूल दुआएँ

दुआ घर में दाखिल होते वक्त :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ
بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا (مشكوٰة شريف)

अल्लाहुम्म इन्नी अस अ लु क ख़ैरल मौलिजी व खैरल मख़्रिजि बिस्मिल्लाहि व लज्ना व अ़लल्लाहि तवक्कल्ना (मिश्कात)

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ अच्छे दाखिल होने और बेहतर निकलने का अल्लाह के नाम से दाखिल हुए और हम ने अल्लाह पर भरोसा किया। (फिर घर वालों को सलाम करें।)

घर से बाहर निकलते वक्त :

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط

बिस्मिल्लाहि त वक्कलतु अलल्लाहि व ला हौ ल वला कू व्व त इल्ला बिल्लाह।

तर्जमा- मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया गुनाहों से बाज़ रहने और इबादत व नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ से है :

खाना शुरु करते वक्त: بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ ط

बिस्मिल्लाहि व अ़ला बर क तिल्लाहि (मुस्तदरक)
तर्जमा– मैने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरु किया।

खाने के बाद यह दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَهَدَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ़ म ना व सक़ाना व हदाना व ज अ ल ना मिनल् मुस्लिमीन
तर्जमा– तमाम खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हिदायत दी और मुसलमान बनाया।

सोते वक्त यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى ط

अल्लाहुम्म बि इस्मि क अमूतु व अह्या (बुखारी)
तर्जमा– ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरुँ और तेरा नाम लेकर ज़िन्दा रहुँ।

इसके बाद ३३ बार ***सुब्हानल्लाहि*** ३३ बार ***अलहम्दु लिल्लाहि*** और ३४ बार ***अल्लाहु अकबर*** फिर एक मरतबा ***आयतुल कुर्सी*** एक बार ***सूरह फ़ातिहा*** और एक बार ***सूरह इख्लास*** और एक बार सूरह ***काफिरुन*** इसके बाद तीन मरतबा पढ़े।
अस्तग़फिरुल्लाहुल लज़ी लाइला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ط

जब नींद से बेदार हो:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ط

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बाअ़ द मा अमा त ना व एलैहिन् नुशूर (बुखारी व मुस्लिम)
तर्जमा- सब खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमको ज़िन्दा किया बाद मौत देने के और उसी की तरफ जाना है।

बैतुल ख़ला जाते वक्त:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

अल्लाहुम्म इन्नी अ ऊ ज़ु बि क मिनल खुब्सि वल खबाइसि
तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ खबीस जिन्नों से मर्द हों या औरत। (बुखारी जिल्द २ सफ्हा ९३६)

बैतुल खला से निकलते वक्त:

गुफ़्रा न क कहे इसके बाद यह दुआ पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी अज़ ह ब अन्निल अज़ा व आ़फानी
तर्जमा- सब ताअ़रीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझसे ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे आ़फ़ियत दी।

नया लिबास पहनते वक्त:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ ط

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी कसानी मा ओवारी बिही औ़रती व अ त जम्मलु बिही फी हयाती
तर्जमा- सब ताअ़रीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझको कपड़ा पहनाया जिससे मैं अपनी शर्मगाह को छुपाता हूँ और अपनी जिन्दगी में इससे खूबसूरती हासिल करता हूँ :

सफर का इरादा हो तो यह पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِیْرُ ط (حصن حصین)

अल्लाहुम्म बि क असूलु व बि क अहूलु व बि क असीरु

तर्जमा- ऐ अल्लाह मैं तेरी ही मदद से दुश्मनो पर हमला करता हूँ और तेरी ही रहमत से उनके दफ़अ् करने की तदबीर करता हूँ और तेरे ही फज्ल से चलता हूँ (हस्नेहसी)

जब सवार होने लगे तो यह पढ़े:

किसी चीज़ पर सवार हो तो ***बिस्मिल्लाह*** कहे और जब बैठ जाए तो ***अलहम्दु लिल्लाह*** कहे फिर यह दुआ पढ़े-

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़ र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुकरिनीन।

तर्जमा- अल्लाह पाक है जिसने इसको हमारे कब्ज़ा में कर दिया और हम उसकी कुदरत के बगैर इसको क़ब्ज़ा में करने वाले न थे।

जब कोई नेअ़मत मिले तो यह पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी बि नेअ़मतिही ततिमुस्सालिहात

तर्जमा : तमाम ताअ़रीफें उस अल्लाह के लए हैं जिसकी नेअ़्मत से अच्छी चीजे मुकम्मल होती हैं।

आईना देखकर यह पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُمَّ كَمَا اَحْسَنْتَ خَلْقِىْ فَحَسِّنْ خُلُقِىْ

अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहुम्-म कमा हस्सन्त ख़ल्क़ि फ़हस्सिन् ख़ुल्क़ी०

तर्जमा- ऐ अल्लाह जिस तरह तू ने मेरी ज़ाहिरी सूरत अच्छी बनायी उसी तरह मेरी आ़दत व सीरत भी अच्छी बना दे।

आँखों में सुर्मा लगाते वक्त:

اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ

अल्लाहुम्म मत्तिअ़नी बिस्मए वल ब स रि
तर्जमा- ऐ अल्लाह मुझे फायदा दे कान और आँख से

मुसीबत के वक्त यह पढ़े:

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन
तर्जमा- हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

मुसाफा के वक्त यह कहे: یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ
यग़फिरुल्लाहु लना व लकुम
तर्जमा- अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फिरत करे

खाली घर में दाखिल होते वक्त:

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लै क या रसूलल्लाह
तर्जमा- ऐ अल्लाह के रसूल आप पर दुरूद व सलाम हो।

दुरुदे ख़ास

सल्लल्लाहु अ़लै-क या मुहम्मदु
नूरम-मिन् नूरिल्लाहि

कोई रंज या मुसीबत आ जाए तो सिद्क़ दिल से इस दुरूद पाक को पढ़ने से हर क़िस्म की मुसीबतें, तकलीफ़ें और रंज व ग़म ख़त्म हो जाते है।

दुरूदे जुम्आ

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَآلِهٖ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله

सल्लल्लाहु अलन नबीइल उम्मीये व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातवँ व सलामन अलै क या रसूलल्लाह

जो शख्स हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रक्खे, तमाम जहान से ज्यादा हुजूर की अजमत दिल में जमाए हुजूर की शान घटाने वालों बद मजहबों से बेजार और उन से दूर रहे वह अगर इस दुरूदे मक्बूल को हर रोज या बरोजे जुम्आ बाद नमाजे फज्र या बाद नमाजे जुम्आ मदीना तय्यिबा की जानिब यानी किब्ला से दाहिने हाथ तिर्छे दस्त बस्ता खड़े होकर पढ़े बेशुमार सवाब पाए इस दुरूद को एक बार पढ़ने से १०० दुरूद का सवाब मिलता है तो जिसने १०० बार पढ़ा गोया दस हजार मरतबा दुरूद पढ़ने का सवाब पाया बेहतर है कि बाद नमाजे जुम्आ दो चार दस बीस आदमी मिलकर पढ़ें।

फजाइल व फ़वाइद : इसके ४० फायदे हैं जो मुअत्तबर हदीसों से साबित हैं यहाँ चन्द जिक्र किये जाते हैं : (१) इस दुरूद शरीफ के पढ़ने वाले पर खुदाए तआला तीन हजार रहमतें नाजिल फरमाएगा (२) उस पर दो हजार बार अपना सलाम भेजेगा (३) पाँच हजार नेकियाँ उसके नामए आमाल में लिखेगा (४) पांच हजार गुनाह

मुआफ फरमाएगा (५) उसके माथे पर लिख देगा कि यह दोजख से आजाद है (६) अल्लाह उसे क्यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा (७) उसके माल में तरक्की और बरकत देगा (८) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा (९) दुश्मनों पर गल्बा देगा (१०) दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा (११) किसी दिन ख्वाब में बरकते जियारते अक्दस से मुशर्रफ होगा (१२) ईमान पर खातिमा होगा (१३) क्यामत में हुजूर की शफाअत नसीब होगी (१४) अल्लाह तआला उससे ऐसा राजी होगा कि कभी नाराज न होगा।

इस्मे आज़म

इन्नी अस्अलु-क बि अन्न-क अन्तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्तल् अहदुस्समदुल्लज़ी लम यलिद व लम् यूलद व लम् य कुल्लहू कुफुवन अहद०

अल्ला हुम्-म इन्नी अस्अलु-क बि अन्-न लकल् हम्दु ला इला-ह अन्तल् हन्नानुल् मन्नानु बदी ऊस्समावाति वल्अर्दि या ज़ल जलालि वलइक्रामि या हय्यु या क़य्यूमु अस्अलु-क व इलाहुकुम् इला हुंव् वाहिद० ला इला-ह हुवर्रहमानुर्रहीम ० अलिफ़ लाम मीम ० अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल क़य्यूमु ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन ०

अस्नाद दुआ-ए-गन्जुल अर्श

रिवायत है कि एक दफ़ा ***हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम्*** मसजिद में तशरीफ़ रखते थे कि नागाह ***जिब्राईल अलैहिस्सलाम*** आये और फज़ाइल इसके बयान किये। इस तूल व तवील अस्नाद को हज्फ करके कम करके पढ़ने वालों के हुस्ने एतेक़ाद व रुसूखे अक़ीदत पर छोड़ दिया जाता है और तबर्रुकन इसका लब्बे लुबाब असल नतीजा लिखा जाता है कि जिब्राईल ने मिन्जुम्ला इन फजाइल के यह भी फर्माया कि क़ारी को इस दुआ के ज़रिये से हक तआला तीन चीजें, इनायत फरमाएगा अव्वल उसकी रोजी में बरकत देगा दूसरे उस को गैब से रोजी मरहमत् फरमाएगा तीसरे उसके दुश्मन आजिज़ रहेंगे। और जो कोई इस दुआ को पढ़ा करेगा या अपने पास रखेगा तो अल्लाह की रहमत उस पर नाजिल होगी और मैदाने जंग में गालिब रहेगा और सफर से सही सलामत मअ़ गनीमत घर आवेगा और यह बरकत इस दुआ के जादू और शैतानों के शर से और सभी बलाओ से जमीनी, आसमानी से महफूज रहेगा इसको धोकर अव्वल बारिश के पानी से मसहूर, जादू वाले मरीज को पिलाये तो शिफा होगी और इस ताअ़वीज को धोकर ऐसे शख्स को हर रोज पिलाया जाये कि जिसकी बीमारी ने इलाज करने वाले को हैरान कर रखा हो तो खुदा के फज्लोकरम से जल्द शिफा हो और बे औलाद वाले को इसका तावीज मुश्क व जाफरान से लिख कर २१ इक्कीस रोज पिलाया जाये तो साहिबे औलाद हो और इसकी बरकत से उम्मीद है क़यामत के रोज ऐसा दरजा बुलन्द पायेगा कि और लोग इस दर्जा की तमन्ना करेंगे और इसका पढ़ने वाला कभी रास्ता न भूलेगा। अल्गरज इस दुआ-ए बुजुर्गवार की कोई क्या खूबी और तारीफ बयान कर सकता है अगर सात आसमान और सात जमीन के कागज बनाये जाए और जमीन के पेड़ों के कलम हों और कुल मख्लूकात पैदा की हुयी आसमान व जमीन अजल से अबद तक इसकी तारीफ लिखते रहें तो भी एक हर्फ की तारीफ पूरी न हो, न कि कुल की। इसमें रैब व शक को दखल नहीं।

दुआ-ए-गन्जुल् अर्श

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् मलिकिल् कुद्दूसि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् अज़ीज़िल जब्बारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानर्रऊफ़िर्रहीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़फ़ूरिल् हलीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् करीमिल हकीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् क़वीयिल वफ़ीयि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् लतीफ़िल् ख़बीरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानस्-समदिल् मअ़बुदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़फ़ूरिल् वदूदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् वकीलिल् कफ़ीलि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानर्रक़ीबिल हफ़ीज़ि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानद् दाइमिल् क़ाइमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् मुहयिल् मुमीति
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हय्यिल् क़य्यूमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ख़ालिक़िल बारियि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् अ़लीयिल् अ़ज़ीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् वाहिदिल अ-हदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् मुअमिनिल मुहैमिनि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हसीबिश्शहीदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हलीमिल् करीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् अव्वलिल् कदीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् अव्वलिल् आख़िरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानज़्ज़ाहिरिल् बातिनि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् क़ाज़िइल् हाजाति
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानर्रहमानिर्रहीमि

ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न रब्बिल अर्शिल् अज़ीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् कबीरिल् मु-तआलि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न रब्बियल् अअ्ला
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् बुरहानिस्सुल्तानि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानस्समीइल् बसीरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् वाहिदिल क़ह्हारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अ़लीमिल हकीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानस् सत्तारिल ग़फ़्फ़ारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानर्रहमानिद् दय्यानि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् कबीरिल् अकबरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अ़लीमिल अ़ल्लामि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानश्शाफ़ियिल काफ़ी
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अज़ीमिल बाक़ी
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानस्स-मदिल अ-हदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्दि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न खालिकिल मख़्लूक़ाति
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न मन ख़-लक़ल्लै-ल वन्नहा-र
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् ख़ालिक़िर्रज़्ज़ाक़ि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् फत्ताहिल अलीमी
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अज़ीज़िल ग़नीयि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् ग़फ़ूरिश्शकूरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अज़ीमिल् अ़लीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न ज़िल्मुल्कि वलमलकूति
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न ज़िल्ईज़्ज़ति वल-अ़ज़मति
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न ज़िल् हैबति वल्कुदरति
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न ज़िलकिबरियाइ वल-ज-बरूति
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानस् सत्तारिल् अज़ीमि

ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् आलिमिल ग़ैबि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हमीदिल मजीद
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हकीमिल क़दीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् क़ादिरिस्सत्तारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानस्समीईल् अलीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़नीयिल अज़ीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् अल्लामिस्सलामि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् मलिकिन्नसीरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़नी यिर्रहमानि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न क़रीबिल ह-सनाति
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न वली यिल् ह-सनाति
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-नस्सबूरिस्सत्तारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ख़ालिक़िन्नूरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़नीयिल् मुअ जिज़ि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् फ़ादिलिश्शकूरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़नीयिल क़दीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न ज़िल् जलालिल मुबीनि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ख़ालिसिल मुख़्लिसि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न सादि क़िल वअ़्दि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हक़्क़िल मुबीनी
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हान ज़िल क़ूव्वातिलमतीनि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् क़वीयिल अज़ीज़ि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् हय्यिल लज़ी ला यमूतु
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न अल्लामिल ग़ुयूबि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न सत्तारिल ओयूबि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हानल् ग़ुफ़रानिल मुस्तआ़नि
ला इला-ह इल्लल्लाहु	सुब्हा-न रब्बिल आ-लमी-न

ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-नर्रहमानिस्सत्तारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानर्रहीमिल् गफ्फारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अ़ज़ीज़िल वह्हाबि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् क़ादिरिल मुक़्तदिरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न ज़िल् गुफ़रानिल हलीमि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न मालिकिल मुल्कि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् बारिइल मुसव्विरि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् अ़ज़ीज़िल जब्बारि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् जब्बारिल मुतकब्बिर
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् कुद्दूसिस् सुब्बूहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न रब्बिल मलाइ-काति वर्रूहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हा-न जिल आलाइ वन्नअ़माइ
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् मलिकिल मकसूदि
ला इला-ह इल्लल्लाहु सुब्हानल् हन्नानिल मन्नानि
ला इला-ह इल्लल्लाहु आदमु सफ़ीयुल्लाह
ला इला-ह इल्लल्लाहु नूहुन नजीयुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु इबराहीमु ख़लीलुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु इस्माईल ज़बीहुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु दाऊदु खली-फ़तुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु ईसा रूहुल्लाहि
ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला खैरि ख़ल्क़िहि व नूरि अर्शिहि अफ़ज़लिल् अम्बियाइ वल् मुरसली-न हबीबिना व सय्यिदिना व सनदिना व शफ़ीईना व मौलाना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन बि रह़मति-क या अर्-हमर् राहिमी-न०

मुनाजात ब दरगाह काज़ियल- हाज़ात

रोजाना सुब्ह व शाम या हर नमाज़ के बाद इसको पढ़ लिया करे, बेहतर है।

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो
या इलाही भूल जाऊँ नज़अ़ की तकलीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफा का साथ हो
या इलाही गो रे तीरह की जब आये सख्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुब्हे जाँफिज़ा का साथ हो
या इलाही जब पड़े मह्शर में शोरे दारो गीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो
या इलाही जब जबानें बाहर आयें प्यास से
साहबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मह्री पर हो जब खुर्शीदे हश्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गर्मी-ए-महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठण्डी हवा का साथ हो
या इलाही नाम-ए-आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो
या इलाही जब बहें आखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज होटों की दुआ का साथ हो
या इलाही जब हिसाबे खन्दए बेजा रूलाए
चश्मे गिरयाने शफीए मुरतजा का साथ हो
या इलाही रंग लायें जब मिरी वे बाकियाँ
उन की नीची नीची नजरों की हया का साथ हो
या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुल सिरात
आफताबे हाशमी नूरुल्हुदा का साथ हो
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़म जुदा का साथ हो
या इलाही जो दुआएँ नेक हम तुझ से करें
कुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो
या इलाही जब रज़ा ख्वाबे गिराँ से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्के मुस्तफा का साथ हो

तादादे रकअ़त तरतीब के साथ

फ़ज्र की नमाज़	पहले दो रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह इसके बाद दो रकअत फ़र्ज़। कुल चार (४) रकअत।
जुहर की नमाज़	पहले चार रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ इसके बाद दो रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह और दो रकअ़त नफ्ल। कुल बारह (१२) रकअ़त।
अस्त्र की नमाज़	पहले चार रकअ़त सुन्नत गैर मुअक्किदह इसके बाद चार रकअ़त फ़र्ज़। कुल आठ (८) रकअ़त।
मग़िब की नमाज़	पहले तीन रकअ़त फ़र्ज़ इसके बाद दो रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह फिर दो रकअ़त नफ्ल। कुल सात (७) रकअ़त।
ईशा की नमाज़	पहले चार रकअ़त सुन्नत गैर मुअक्किदह फिर चार रकअ़त फ़र्ज़ फिर दो रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह फिर दो रकअ़त नफ्ल फिर तीन रकअ़त वित्र वाजिब फिर दो रकअ़त नफ्ल। कुल सतरह (१७) रकअ़त।
जुम्अ की नमाज़	पहले चार रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह फिर दो रकअ़त फ़र्ज़ फिर चार रकअ़त सुन्नत मुअक्किदह फिर दो रकअ़त सुन्नत गैर मुअक्किदह फिर दो रकअ़त नफ्ल। कुल चौदह (१४) रकअ़त।
ईदैन की नमाज़	दो (२) रकअ़त वाजिब।
दीगर नमाज़ें	तरावीह की बीस (२०) रकअ़तें दो-दो करके सुन्नत मुअक्किदह, तहज्जुद की (८) आठ रकअतें, इश्राक की (२) रकअ़त, चाश्त की बारह (१२) रकअ़त, अव्वाबीन की छः (६) रकअ़त, सलातुत्तस्बीह की चार (४) रकअ़त।